शोध मंथन Vol. XV No.I Jan.-Mar.2024 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 8.870 (SJIF)

# उत्तराखंड की लोक कला ऐपण

प्राप्तिः 14.03.2024
स्वीकृतः 25.03.2024

21

**डॉ० ओम प्रकाश मिश्रा**
प्राचार्य
मिनर्वा इंस्टीट्यूट ऑफ मैनजमेंट एंड टेक्नोलॉजी
देहरादून (उत्तराखण्ड)
ईमेलः *mishraop200@gmail.com*

**दामिनी**
शोधार्थी
मिनर्वा इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड टेक्नोलॉज, देहरादून (उत्तराखण्ड)

***सारांश***

*उत्तराखंड की लोक कला व संस्कृति का इतिहास बहुत ही अनोखा और सुंदर है। राज्य के मौसम और जलवायु के अनुरूप ही है। उत्तराखंड एक पहाड़ी प्रदेश हैं, और इसलिए यहां ठंडा बहुत होता है। इसी ठंडी जलवायु के आसपास ही उत्तराखंड की संस्कृति के सभी पहले जैसे रहन–सहन वेशभूषा लोककलाएँ इत्यादि घूमते हैं। उत्तराखंड राज्य दो मंडलों में विभाजित है।*

*1) कुमाऊँमंडल, 2) गढ़वालमंडल*

*ऐपण उत्तराखंड के कुमाऊँ मंडल की लोक कला हैं। ऐपण की शुरुआत अल्मोड़ा में चंद्र राजवंश के काल में हुई थी। ऐपण भारत के किसी भी प्रांत की हो, वह लोग कला है। नई पीढ़ी पारंपरिक रूप से इस कला को सीखती है, और उसी प्रकार से अपने–अपने परिवार की परंपरा को कायम रखती है। कुमाऊँ की लोककला का स्वरूप भारत के अन्य कलाओं व लोककलाओं के समरूप ही पाया जाता है। हिमालय की वृक्षस्थलीय में फैला लगभग 1500 वर्ग किलोमीटर अल्मोड़ा, बागेश्वर, चंपावत, पिथौरागढ़, नैनीताल व उधमसिंह नगर नामक जिलों को कुमाऊँ क्षेत्र कहा जाता है। जो भारत वर्ष के उत्तराखंड नामक राज्य में है। इन जिलों की पारंपरिक कलाओं को कुमाऊँनी लोककला अर्थात् कुमाऊँ की लोककला कहते हैं। ऐपण शब्द संस्कृत शब्द के 'अर्पण' शब्द से लिया गया है, जिसका अर्थ है 'लिखना'। ऐपण का सबसे महत्वपूर्ण तत्व उत्सवधार्मिता है। इसके लिए शुभ प्रतीको का चयन किया जाता है। इस प्रकार के प्रतीक पीढ़ियो से इस रूप में बनाए जाते रहे हैं, और इन प्रतीकों का बनाना आवश्यक होता है। प्राचीन काल का प्राकृतिक रंगों से गेरू एवं पिसे हुए चावल के घोल 'बिस्वार' की सहायता से महिलाएँ अपनी दाहिनी हाथ की अंतिम तीन उंगलियो की सहायता से विभिन्न ऐपण आकृतियों को बनाती आई है। जिसका प्रत्येक कुमाऊँनी घर में एक महान सांस्कृतिक और धार्मिक महत्व है। कुमाऊँ की इस अनमोल*

*धरोहर को सजाने, संवारने, सहेजने का पूरा श्रेय यहां की महिलाओं को जाता है। ऐपण के बिना धार्मिक अनुष्ठान त्यौहार व पूजा अधूरी मानी जाती है। यह कला देवी–देवताओं और प्रकृति के पहलुओं पर आधारित है। वर्तमान समय में ऐपण विकसित रूप ले चुका है। पहले इस्तेमाल किया जाने वाला पेंट प्राकृतिक रंगों से बनाया जाता था। आजकल पोस्टर कलर और ऐक्रेलिक कलर ऑयल कलर का प्रयोग किया जाता है। अब विभिन्न वस्तुओं पर इसे बनाया जाता है। जैसे :– कार्ड, बर्तन, वॉल हैंगिंग, कपड़े आदि में बनाए जाने लगे हैं। ऐपण कला माताओं से लेकर उनकी बेटियों और बहुओ तक कई पीढियो से बनाती हुई चली आ रही है। इसका अभ्यास मुख्य रूप से अमीर–उच्च वर्ग की ब्राह्मण महिलाएँ करती है। ऐपण डिजाइन घर की दहलीज मुख्य द्वार, फर्श, तुलसी के पौधे के गमले, मंदिर की दीवारों, मंदिर की सीढ़िया, रसोई घर की दीवारों पर, ओखली और हवन कुंडों पर अकेले जाते हैं। वर्तमान समय में तकनीकी संसाधनों के विकास ने ऐपण हेतु कई वैकल्पिक संसाधन विकसित कर दिए हैं। आज विभिन्न प्रकार के आधुनिक उपकरण पेंट, ब्रश, स्टीकर, कीप आदि ने ऐपण को और भी आधुनिक बना दिया है। आज की इस भागदौड़ भरी जिंदगी में हमारा समाज रोजगार एवं उचित सुविधाओं की चाहत में पलायन के साथ–साथ हमारी संस्कृति को भी भूलते जा रहा है। जिस कारण ऐपण का महत्व सीमित ही रह गया है। जिसे सुरक्षित करने की जरूरत है। ताकि पूर्वजों द्वारा धरोहर के रूप में हमें प्रदान की गए। इन संस्कृतियों के इस महत्वपूर्ण भाग को संरक्षित एवं विश्व स्तर पर उकेर कर एक नायब पहचान दिलाया जा सके। वर्तमान समय में जिन आधुनिक तरीकों से हम इस लोककला को भूलने की कोशिश कर रहे हैं। उस पर लगाम लगाने की नितान्त आवश्यक है। जिससे हम हमारी लोककला ऐपण को लुप्त होने से बचा सकते हैं।*

***मुख्य बिंदु***

*लोककला, ऐपण, संस्कृति, कुमाऊँ आधुनिक, महिलाएँ, धार्मिक, उत्तराखंड, कला, भारत।*

## लोक कला और उत्तराखंड की लोक संस्कृति

हिमालय की वृक्षस्थली में फैला लगभग 1500 वर्ष किलोमीटर अल्मोड़ा, बागेश्वर, चंपावत, पिथौरागढ़ नैनीताल, व उधमसिंह नगर नामक जिलों को कुमाऊँ क्षेत्र कहा जाता है। जो भारतवर्ष के उत्तराखंड नामक राज्य में है, इन जिलों की पारंपरिक कलाओं को कुमाऊँनी लोककला अर्थात् कुमाऊँ की लोककला कहते हैं। उत्तराखंड की लोककला व लोक संस्कृति का इतिहास बहुत ही अनोखा और सुंदर है।इस राज्य में के मौसम और जलवायु के अनुरूप ही है। उत्तराखंड एक पहाड़ी प्रदेश है। और इसलिए यहाँ ठंड बहुत होती है। इस ठंडी जलवायु के आसपास ही उत्तराखंड की संस्कृति के सभी पहलू जैसे रहन–सहन वेशभूषा लोक कला इत्यादि घूमते हैं। उत्तराखंड राज्य दो मंडलों में विभाजित हैउत्तराखंड एक पहाड़ी प्रदेश है। इसलिए यहाँ बहुत ठंडा क्षेत्र माना जाता है, और यहाँ के लोगों के मकान पक्के होते हैं। दीवारों पत्थरों की होती है। पुराने घरों के ऊपर पत्थर बिछाए जाते हैं। वर्तमान में लोग सीमेंट का उपयोग करने लगे हैं। अधिकतर घरों में रात को रोटी

तथा दिन में भात (चावल) खाने का प्रचलन है। लगभग हर महीने कोई ना कोई त्यौहार मनाया जाता है। त्यौहार के बहाने अधिकतर घरों में समय–समय पर पकवान बनाए जाते हैं। स्थानीय लोगों द्वारा उगाई गई फैसले रैस, भट्ट आदि दालों का प्रयोग होता है। प्राचीन समय में मण्डुवा व झुंगोरा स्थानीय मोटा अनाज होता है, अब इनका उत्पादन बहुत कम होता है। यहाँ के खेत सीढ़ीनुमा होते हैं। अतः यहाँ का रहन–सहन भारत के अन्य राज्यों से भिन्न है पहाड़ के लोग बहुत ही परिश्रमी होते हैं। पहाड़ों को काट–काटकर सीढ़ीदार खेत बनाए जाते है। लोककला की दृष्टि से उत्तराखंड बहुत ही समृद्ध हैद्य घर की सजावट में ही लोककला सबसे पहले देखने को मिलती है। दशहरा, दीपावली, जनेऊ आदि अवसरों पर महिलाएँ घर में ऐपण (अल्पना) बनाती है। इसके लिए घर या सीढ़ियों को गेरू से लीपा जाता है। चावल को भिगोकर उसे पीसकर (बिस्वार) तैयार कर लेती हैं। फिर महिलाएँ इस लेप से ऐपण बनाती है। हरेले आदि पर्वो पर मिट्टी के डिकारे बनाए जाते हैं। ये डिकारे भगवान के प्रतीक माने जाते हैं। उनकी पूजा की जाती है। यहाँ के घरों को बनाते समय भी लोक कला प्रदर्शित होता है। उत्तराखंड की लोक धुने भी अन्य प्रदेशों से भिन्न है यहाँ के वाद्य यंत्रों में नगाड़ा, ढोल– दमाऊँ, रणसिंह, भेरी, हुडका, बीन, डौंरा, कुरूली, अलगाजा प्रमुख है। यहां के लोक गीतों में न्योली, जोड झोडा, छपेली, बैर व फाग प्रमुख है। इन गीतों की रचना आम जनता द्वारा की जाती है। लोग गायक रात भर ग्रामवासियों को लोक गाथाए सुनाते हैं। इसमे मालसाई, रमैला, जागर आदि प्रचलित है। उत्तराखंड का छोलिया नृत्य काफी प्रसिद्ध है। इस नृत्य मे नृतक लंबी–लंबी तलवारें व गेंडे की खाल से बनी ढाल लिए युद्ध करते हैं। यह युद्ध नगाड़े की चोट व रणसिंह के साथ होता है। इसलिए लगता है, यह राजाओं के ऐतिहासिक युद्ध का प्रतीक है। कुमाऊँ तथा गढ़वाल में झूमैला तथा झौड़ा नृत्य होता है। झौड़ा नृत्य में महिलाएँ व पुरुष बहुत बड़े समूह में गोल घेरे मे हाथ पकड़कर गाते हुए नृत्य करते हैं। नृत्यो मे सर्प नृत्य, पांडव नृत्य, जौनसारी, चांचरी भी मुख्य है।

1) **गढ़वाल संस्कृति :–** गढ़वाली यहाँ बोली जाने वाली मुख्य भाषा है। जिसकी कई बोलियाँ भी है। जिनमें जौनसारी, मरची, जढी और सैलानी शामिल है। गढ़वाल में कई जातियां समूह और जातियों के लोग रहते हैं इनमें राजपूत शामिल है। जिनके बारे में माना जाता है, कि वह आर्य मूल के हैं, ब्राह्मण जो राजपूतो के बाद में चले गए, गढ़वाल के आदिवासी जो उत्तरी इलाकों में रहते हैं, और जिनमें जौनसारी, जाध, मार्चा और वन गुजर शामिल है।
2) **कुमाऊँ संस्कृति :–** कुमाऊँ के लोग 13 बोलियाँ बोलते हैं। जिनमें कुमैया, गंगोला, सोरयाली, सिराली, असकोटी, दानपुरिया, जोहारी, चौगरत्यख्याली, माझ, कुमैया, ख्सपर्जिया, पछाई और रौचौभैसी शामिल है। भाषाओं के इस समूह के मध्य पहाड़ी भाषाओ के समूह के रूप में जाना जाता है। कुमाऊँ अपने लोक साहित्य मे समृद्ध है। जिसमें मिथक, नायक, नायिका, वीरता, देवी–देवता और रामायण और महाभारत के पात्र शामिल है कुमाऊँ का सबसे लोकप्रिय नृत्य छलरिया के नाम से जाना जाता है। और यह क्षेत्र की मार्शल परंपराओं से संबंधित है। सभी त्योहार बहुत ही उत्साह के साथ मनाए जाते हैं, और आज भी ऐसे पारंपरिक नृत्य रूपों का गवाह बनते हैं। उत्तराखंड की प्रमुख भाषा हिंदी है यहा अधिकतर सरकारी कामकाज हिंदी में होते हैं। नगरीय क्षेत्रों में हिंदी बोली जाती है। कुमाऊँ

मंडल के ग्रामीण अंचलों में कुमाऊँनी तथा गढ़वाल मण्डल के ग्रामीण क्षेत्रों में गढ़वाली बोली जाती है। कुमाऊँनी तथा गढ़वाली भाषा को लिखने के लिए देवनागरिक लिपि को प्रयुक्त किया जाता है। गढ़वाल के जौनसार बाबर क्षेत्र में जो भाषा बोली जाती है। उसे जौनसारी बोली कही जाती है।

**उत्तराखंड के लोक नृत्य और संगीत**

उत्तराखंड के लोगों का जीवन संगीत और नृत्य से भरपूर है नृत्य को उनकी परंपराओं का एक प्रमुख हिस्सा माना जाता है।

1) बरदा नाटी जौनसार बाबर क्षेत्र का लोकप्रिय नृत्य है।
2) लंगविर नृत्य पुरुषों द्वारा किया जाने वाला एक कलाबाजी नृत्य है।
3) पांडव नृत्य संगीत और नृत्य के रूप में महाभारत का वर्णन है।
4) बाजूबंद चरवाहा के प्रेम और त्याग की बात करती है।
5) खुदेद एक ऐसी ऐसी महिला की पीड़ा के बारे में बात करती है। जो अपने पति से अलग हो जाती है।
6) छुराचरवाहों के अनुभव और उनके द्वारा युवा पीढ़ी को दी गई सलाह के बारे में बात करता है।

**लोक नृत्य**

यहाँ के जनजीवन में किसी न किसी रूप से संपूर्ण भारत के दर्शन सुलभ है। इस स्वस्थ भावना को जानने के लिए यहाँ के लोक नृत्य पवित्र साधन है यहां के जनवासी अनेक अवसरों पर विविध प्रकार के लोक नृत्य का आनंद उठाते हैं।

**धार्मिक नृत्य**

देवी–देवताओं से लेकर अप्सराओं और भूत–पिशाचो तक की पूजा धार्मिक नृत्यों के अभिनय द्वारा संपन्न की जाती है। इन नृत्यों में गीतों एवं वाद्य यंत्र के स्वरो द्वारा देवता विशेष पर अलौकिक कंपन के रूप में होता है।

धार्मिक नीति की चार अवस्थाएं हैं।

1) **विशुद्ध देवी –** देवताओं के नृत्य :– ऐसे नृत्य में 'जागए' लगते हैं। उनमें प्रत्येक देवता का आवाहन, पूजा एवं नृत्यु होता है। ऐसे नृत्य यहां 40 से ऊपर है।
2) **देवता के रूप में पांडवों का पंडौ नृत्यः–** पांडवों की संपूर्ण कथा को वातारुप में गाकर विभिन्न शैलियों में नृत्य होता हैं। संपूर्ण उत्तरी पर्वतीय शैलियों में पांडव नृत्य होता है।
3) **मृत अशांत आत्मा नृत्य :–** मृतक की आत्मा को शांत करने के लिए अत्यंत कारुणिक गीत' रांसो' का गायन होता है, और डमरू तथा थाली के स्वरो में नृत्य का बाजा बजाया जाता है। इस प्रकार के 6 नृत्य हैं।
4) **रणभूत देवताः–** युद्ध में मरे वीर योद्धा भी देव रूप में पूजे तथा नचाये जाते हैं। बहुत पहले कैत्यूरो और राणा वीरों का घमासान युद्ध हुआ था। आज भी उन वीरों की अशांत आत्मा उनके वंशजों के सिर पर आ जाती हैं। भंडारी जाती पर कैंत्यूर वीर और रावत जाति पर राणारौत वीर आते हैं। आज भी दोनों जातियों के नृत्य में रणकौशल देखने योग्य होता हैं।

**उत्तराखंड के त्यौहार**

1) **कुमाऊँनी होली :–** यह होली तीन रूपों में मनाई जाती है, बैठकी होली, खली होली और महिला होली इस त्यौहार की अनोखी बात यह है, कि इसे खूब संगीत के साथ मनाया जाता है।
2) **हरेला :–** यह एक त्यौहारों है जो वर्षो ऋतु या मानसून की शुरुआत का प्रतीक है। कुमाऊँ समुदाय के लोग यह त्यौहार श्रावण माह यानी जुलाई–अगस्त के दौरान मनाते है। इस त्यौहार के बाद भिटौली आती है, जो चौत्र माह यानी मार्च–अप्रैल मे मनाया जाता है यह कृषि के इर्द–गिर्द घूमता है। जहां महिलाएं मिट्टी के बीच बोती है, और त्योहार के अंत तक वे फसल काटती है। जिसे हरेला कहां जाता है।
3) **जागेश्वर मेला :** – बैसाख महीने के पंद्रहवे दिन जागेश्वर में भगवान शिव के मंदिर में आयोजित किया जाता है। जो मार्च के अंत से अप्रैल की शुरुआत तक चलने वाली अवाधि है। मेले के दौरान लोग एक प्रकार की आस्था के रूप में ब्रह्म कुंड के नाम से जाने वाले कुंड की डुबकी लगाते हैं।
4) **कुभं मेला : –** उत्तराखंड के सबसे बड़े और सबसे लोकप्रिय त्यौहार में से एक है, या मेला 3 महीने तक चलने वाला त्योहार हैं, और हर 4 साल में एक बार इलाहाबाद, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक के बीच लगता है, यानी 12 साल में केवल एक बार किसी एक स्थान पर लगता हैं।
5) **उत्तराखंड का भोजन :–** उत्तराखंड के भोजन में गढ़वाली व्यंजनों और कुमाऊँनी व्यंजनों का प्रभुत्व है। जो इसके दो मुख्य क्षेत्र है। व्यंजन सरल और स्थानीय रूप से उगाए गए हैं। जिनमें जटिल मसालो का प्रभुत्व नहीं है। उत्तराखंड के कुछ सबसे प्रसिद्ध व्यंजन धीमी आग पर पकाए जाते हैं, और इनमें दाल शामिल होती है। उत्तराखंड की कुछ सबसे स्वादिष्ट मुह में पानी ला देने वाली विशेषताएं शामिल है।

1) उड़द दाल के पकौड़े जो की अलग–अलग दालों से बनाए गए मसालेदार पकौड़े हैं।
2) दाल से बनता है फानू।
3) झंगोरे की खीर झंगोर से बनाई जाने वाली एक मीठी डिश हैं।
4) चौनसू जो काले चने की दाल से बनाया जाता हैं।
5) भांग की चटनी एक खट्टी स्वाद वाली चटनी है जो भुनी हुई भांग और जीरे को नींबू के रस के साथ मिलाकर तैयार की जाती है।

**उत्तराखंड की पारंपरिक पोषाके**

गढ़वाल की पहाड़ियों के निवासियों का वहा के ठंडे मौसम के कारण कपड़े पहनने का अपना तरीका है जिसके परिणामस्वरुप भेंड या बकरी से प्राप्त ऊन का उपयोग ऊनी कपड़े तैयार करने के लिए किया जाता है।

1) **पुरुषों के पारंपरिक पोषाक :–** लगभग हर कोई एक जैसा ही ड्रेसिंग स्टाइल फॉलो करता है सबसे अधिक पहना जाने वाला निकला परिधान या तो धोती या लुंगी हैं। विभिन्न रंगों

के कुर्ते ऊपरी परिधान के रूप में पहने जाते हैं। इसके अलावा इस पारंपरिक पोशाक को पूरा करने के लिए पगड़ी एक आवश्यक अतिरिक्त चीज है। कुर्ता–पजामा उत्तराखंड के पुरुषों के लिए एक और बहुत प्रसिद्ध विकल्प है। सर्दी के मौसम में पुरुषों के साथ–साथ महिलाएँ भी ऊनी जैकेट के साथ–साथ स्वेटर भी पहनती है।

2) **महिलाओं के पारंपरिक पोषाकः–** घाघरी एक लंबी स्कर्ट है। जिसे उत्तराखंड की ज्यादातर महिलाएँ पहनती हैं। यह एक सुंदर सा रंगीन चोली के साथ पूरक है। जो एक भारतीय ब्लाउज है, और सिर को ढकने वाला एक कपड़ा है। यानी एक ओरनी (पिछौडा) यह ओढ़नी आमतौर पर कमर से मजबूती से जुड़ी होती है। यह गढवाली और कुमाऊँनी दोनों ही महिलाओं की पारंपरिक दुल्हन पोषाक है। जो घाघरा लहंगा–चोली के समान है। पिछौरा एक कुमाऊँनी आवरण है।

**उत्तराखंड के प्रमुख त्योहार**

भारत के प्रमुख उत्सवों जैसे दीपावली, होली, दशहरा इत्यादि के अतिरिक्त यहाँ के कुछ स्थानीय त्यौहार है।

**मेला**

1. देवी धुरी मेला (चंपावत),
2. पूर्णागिरि मेला (चंपावत),
3. नंदा देवी मेला (अल्मोड़ा),
4. उत्तरायणी मेला (बागेश्वर),
5. गौचर मेला (चमोली)
6. वैशाखी (उत्तरकाशी)
7. माघ मेला (उत्तरकाशी)
8. विशु मेला (जौनसार बावर),
9. गंगा दशहरा (नौला, अल्मोड़ा),
10. नंदा देवी राज जात यात्रा जो बारहवें वर्ष होती है।
11. ऐतिहासिक सोमनाथ मेला (माँसी, अल्मोड़ा)

**सक्रांतियाँ**

1. फूल सक्रांतियां यानी फुलदेई (कुमाऊँ व गढ़वाल),
2. उत्तरायणी की संक्रांति यानी घुघुतिया (कुमाऊँ),
3. हरेला (कुमाऊँनी)
4. घी सक्रांतियों (कुमाऊँ व गढ़वाल),
5. मकरैणी (गढ़वाल),
6 बिखौत (गढ़वाल)

**लोककला ऐपण**

कुमाऊँ के इतिहास के प्रारंभ से ही कला विद्यमान थी जिस कला से यहाँ के जनमानस की अभिव्यक्ति व परंपरागत गुण सहस्यो की गहराइयो की जानकारी प्राप्त होती है। वही कुमाऊँ की लोककला है, कुमाऊँ की लोककलाओं का स्वरूप भारत की अन्य कलाओं व लोककलाओं के समरूप ही पाया जाता है। ऐपण उत्तराखंड के कुमाऊँ मंडल की लोककला है। ऐपण की शुरुआत शुरुआत

अल्मोड़ा में चंद्र राजवंश के काल में हुई थी। पुराने वक्त से ही ऐपण डिजाइन पारंपरिक तरिकों से बनाई जाती रही है। ऐपण भारत के किसी भी प्रांत की हो वह लोककला है। अतः इसके तत्व भी लोक से ही लिए गए हैं, और सामान्य है। ऐपण का सबसे महत्वपूर्ण तत्व उत्सवधार्मिता है। इसके लिए शुभ प्रतीको का चयन किया जाता है। इस प्रकार के प्रत्येक पीढियो से उसी रूप में बनाए जाते रहे हैं, और इन प्रतीकों का बनाना आवश्यक होता है। नई पीढ़ी पारंपरिक रूप से इस कला को सीखाती है और इसी प्रकार अपने–अपने परिवार को परंपरा को कायम रखती है। हिमालय की वृक्षस्थली में फैला लगभग 1500 वर्ग किलोमीटर अल्मोड़ा, बागेश्वर, चंपावत, पिथौरागढ़, नैनीताल व उधमसिंह नगर नमक जिलों को कुमाऊँ क्षेत्र कहा जाता है। जो भारत वर्ष के उत्तराखंड नामक राज्य में है। इन जिलों की पारंपरिक कलाओं को कुमाऊँनी लोककला अर्थात् कुमाऊँ की लोककला कहते हैं।

प्राचीन काल में प्राकृतिक रंगों से गेरू एवं पिसे हुए चावल के घोल (बिस्वार) आदि की सहायता से महिलाएँ अपने दाहिनी हाथ की अंतिम तीन उंगलियो की सहायता से विभिन्न ऐपण आकृतियों को बनती आयी है। ऐपण शब्द संस्कृत शब्द 'अर्पण' शब्द से लिया गया है। जिसका शाब्दिक अर्थ है 'लिखना' है। उत्तराखंड के प्रत्येक घर के दीवारों पर, घरों की सीढ़ियो, ऑगन में दहेलियों पर पूजा स्थालों में ऐपण देखने को मिल जाता है। ऐपण एक प्रमुख कला है। जिसका प्रत्येक कुमाऊँनी घर में एक महान सांस्कृतिक और धार्मिक महत्व है। त्योहार, शुभ अवसरों, धार्मिक अनुष्ठान, नामकरण संस्कार, विवाह, जनेऊ आदि जैसे– पवित्र समारोहों में भी बनाये जाते हैं। चांद, सूरज, स्वास्तिक, गणेश जी, फूल–पत्ते, बेल–बूटे, लक्ष्मी पैर, चोखाने, चौपड, शंख, दिये, घंटी, देवी–देवताओं की चौकी आदि की चित्र बहुत खूबसूरती से जमीन पर और घर की दीवारों पर बनाये जाते हैं। जिस जगह पर ऐपण बनाते हैं। उस जगह की पहले गैरू से पुताई की जाती है। उसके बाद उसमें (बिस्वार) सफेद घोल से महिलाये अपनी दाहिनी हाथ के तीन उंगलियो से बनाती है। कुमाऊँ की इस अनमोल धरोहर को सजाने संवारने सहज ने का पूरा श्रेय की महिलाओं को सजाने, सवारने, सहेजने का पूरा श्रेय यहाँ की महिलाओं को जाता है। सच में महिलाये इस कला के माध्यम से अपने मन के भाव अपनी शुभकामनाओं की अभिव्यक्ति अपने घरों की प्रतीक के रूप में करते हैं। इससे न सिर्फ घर सुंदर दिखता है बल्कि घर पवित्र भी हो जाता है। ऐपण के बिना धार्मिक अनुष्ठान त्यौहार व पूजा अधूरी मानी जाती है। धार्मिक अनुष्ठानों में इस कला का प्रयोग चौकी बनाने व दहलीज व अँगन को सजावट के लिए भी किया जाता है। उत्तराखंड के अलावा अन्य राज्यों में भी इस कला का प्रयोग किया जाता है। हर राज्यों में इसे अलग–अलग नाम से जाना जाता है –

**जैसे :–**

उत्तर प्रदेश – चौक पूरा, बिहार – अरिपन, बंगाल – अल्पना, हाराष्ट्र – रंगोली, कर्नाटक – रंगवल्ली, तमिलनाडु – कोल्लम, उत्तराखंड – ऐपण, आंध्र प्रदेश – मुग्गु या मुग्गुलु, हिमाचल प्रदेश – अदूपना, केरल – कोलम, राजस्थान – मांडना।

यह कला देवी–देवता और प्राकृति के पहलुओं पर आधारित है। वर्तमान समय में ऐपण विकसित रूप ले चुका है। पहले इस्तेमाल किया जाने वाला पेंट प्राकृतिक रंगों से बनाया जाता था,

पर आजकल पोस्टर और ऐक्रेलिक कलर ऑयल कलर का प्रयोग किया जाता है। अब विभिन्न पर वस्तुओं पर इसे बनाया जाता है। जैसेः– पूजा थाल, नामपट्ट (नेम प्लेट) कुशन, कवर, विभिन्न चौकियों, होल्डर, कलश, बर्तन आदि पर भी इस कला को बनाये जाते है। दीवारों, कागजों और कपड़े के टुकड़ों को देवी–देवताओं और प्रकृति की वस्तुओं से संबंधित विभिन्न ज्यामितिक और अन्य आकृतियों के चित्रण से सजाया जाता है। पिछौड़े या दुपट्टे को भी इसी प्रकार सजाया जाता है। ऐपण या अल्पना एक कला है। जिसका सभी कुमाऊँनी घरों में एक विशेष स्थान है। कुछ रूपांकरों में सरस्वती चौकी, चामुंडा हस्ती चौकी नवदुर्गा चौकी, ज्योतिपट्ट, दुर्गा चौकी, लक्ष्मी यंत्र चौकी, गणेश चौकी, शिव चौकी आदि चौकिया बनाई जाती है। ऐपण कला माताओं से लेकर उनकी बेटियों और बहूओ तक कई पीढ़ियों से बनाती हुई चली आ रही है। इसका अभ्यास मुख्य रूप से अमीर–उच्च वर्ग की ब्राह्मण महिलाएँ बनाती है। ऐपण संस्कृत के लेपना शब्द से लिया गया है। जिसका अर्थ प्लास्टर होता है। भगवान को प्रसाद चढ़ाने के समान है। यह उत्तराखंड के कुमाऊँ क्षेत्र की एक पारंपरिक लोककला है। ऐपण प्रथा कुमाऊँ में चंद्र वंश के शासनकाल में खूब फली–फूली इसकी उत्पत्ति अल्मोड़ा में हुई थी, और धीरे–धीरे इसने उत्तराखंड के कई राज्यों में अपनी जगह बना ली है। ऐपण के डिजाइन और रूपांकर समुदाय की मान्यताओं और प्राकृति के विभिन्न पहलुओं से प्रेरित है।

**ऐपण कला में रूपांकरों की सूची**

1) पूजा वैदिक के अवसर पर वसुंधरा आकृति को घर के दरवाजे पूजा स्थल और तुलसी के पास पा सकते हैं। महिलाएँ इस पवित्र पेंटिंग को अपनी अनामिका उंगलियो से बनाती हैं।
2) स्वास्तिक रूपांकर चित्रकारों के लिए ज्ञात और अज्ञात सभी देवी–देवताओं का प्रतिनिधित्व करता है। यदि किसी को ऐपण कला का पर्याप्त ज्ञान न हो तो स्वास्तिक बनाना भी मान्य है। यह प्रतीक आगे बढ़ने और सफलता प्राप्त करने का प्रतिनिधित्व करता है।
3) महिलाएं ऐपण कला का अस्तदल कमल रूपांकन बनाती है। जहां हवन होता है, यह अश्टकोणीय है। जिसके केंद्र में कमल की पंखुड़िया और एक स्वास्तिक बनाया हुआ है।
4) लक्ष्मी पदचिंता दीपावली पर बनाई जाने वाली एक आकृति है घर के मुख्य द्वार से लेकर पूजा स्थल तक देवी लक्ष्मी के पैरों के निशाना बनाए जाते हैं।
5) जनेऊ ऐपण उसे स्थान पर बनाया जाता है। जहाँ पवित्र धागा समारोह होता है। इस चित्र के केंद्र में 15 बिंदु है।

**ऐपण कला में बिंदुओं का अत्यधिक महत्व है**

बिंदी के बिना ऐपण का काम अधूरा और अशुभ होता है। रेखाओं का प्रत्येक समूह या ब्लॉक बिंदुओं के साथ समाप्त होना चाहिए। परिवार के किसी सदस्य की मृत्यु 12 वे दिन बिना बिंदी वाला ऐपण बनाया जाता है। तीन दिन बाद महिलाएं, इस ऐपण को धो देती है और शोक की अवधि समाप्त होने के उपलक्ष में नया ऐपण बनती है। ऐपण का निर्माण एक बिंदु से शुरू हो और समाप्त होता है। केंद्र में रखा गया बिंदु ब्राह्मण के केंद्र का प्रतीक है। इसके इस केंद्र से अन्य सभी रेखाएं और पैटर्न उभरते हैं। जो इस बात का प्रतीक है, की संपूर्ण ब्राह्मण अपने केंद्र के चारों

ओर कैसे घूमता है। धार्मिक रूप से प्रेरित रूपांकरों के अलावा, ऐपण कला प्राकृति से भी प्रेरणा लेती है। यहाँ पुष्प पैटर्न और लताएं हैं। ऐपण कला अपने द्वारा बनाए जाने वाले अनुष्ठानों और त्योहारों का प्रतीक है। केंद्र में रखा गया बिंदु ब्राह्मण के केंद्र का प्रतीक है। इस केंद्र से अन्य सभी रेखाएं और पैटर्न उभरते हैं। जो इसके चारों ओर की दुनिया के बदले स्वरूप को दर्शाता है। रूपांकर और डिजाइन समुदाय की धार्मिक मान्यताओं और उनके आसपास के प्राकृतिक संसाधनों से प्रेरित है। ऐपण कला पारंपरिक कला है। इसे सीखने के लिए किसी स्कूल या संस्थान में जाने की जरूरत नहीं पड़ती है, बल्कि इसे एक पीढ़ी अपनी आने वाली पीढ़ी को एक धरोहर के रूप में सिखाती है। एक माँ अपने बच्चों को मदद कराने के बहाने धीरे–धीरे ये कला सिखाती है। जब वो इस कला में पारंपरा हो जाते हैं, तो पूरा कार्यभार उनके ऊपर छोड़ देती है।इस प्रकार पीढ़ी दर पीढ़ी यह कला चलती आ रही है।

**ऐपण के विभिन्न प्रकार**

1) **वसुंधरा ऐपण :–** यह ऐपण मुख्यतः घर की सीढ़िया, दहलीज, मंदिर की दीवारों तथा तुलसी के पौधों के गमले या ओखली और हवन कुंडों पर उकेरे जाते हैं। देहली पर वसुंधरा ऐपण आदर और खुसहाली का प्रतीक माना जाता है।

2) **भद्र ऐपण :–** भद्र ऐपण मुख्यतः दरवाजो की देलि पर तथा मंदिरों की बेदी पर 12 बूंद भद्र ऐपण काफी लोकप्रिय है।

इन ऐपणो के अतिरिक्त पूजा अनुष्ठान और त्योहारों के अनुसार निम्न प्रकार के ऐपण को भी बनाया जाता है।

3) **सरस्वती चौकी :–** सरस्वती विद्या की देवी हैं, जब कोई बच्चा औपचारिक शिक्षा शुरू करता है। तो उसे शुभ शुरुआत देने के लिए पूजा आयोजित किया जाती है। इस चौकी की मुख्य विशेषता केंद्र में स्वास्तिक फूल या दीया के साथ एक पांच–नक्षत्र वाला तारा है। इसके बाद कलाकार केंद्र के टुकड़े को बहने वाले डिजाइन या पुष्प पैटर्न से सजाने के लिए आगे बढ़ता है।

4) **चामुंडा हस्त चौकी :–** यह चौकी 'हवन' या यज्ञ के लिए बनाई जाती है। बीच में एक पांच नुकीले तारे के साथ, एक वृत्त में घिरे दो त्रिकोण, दोनों के बीच में दो विकर्ण रेखाएं चलती

है। जो इस चौकी का केंद्र भाग बनाती है। रिक्त स्थान को पुष्प डिजाइन या लक्ष्मी के पैरों से भर दिया जाता है। चक्र को अक्सर कमल की आठ पंखुड़ियां से सजाया जाता है।

5) **नवदुर्गा चौकी :–** अनुष्ठानिक देवी पूजा के लिए उपयोग किया जाता है। यहाँ मुख्य बिंदु नवदुर्गा का प्रतिनिधित्व करने वाले 9 बिंदु है। जो लोग ऐपण डिजाइन में माहिर है। वे इन बिंदुओं की आडी–तिरछी समांतर रेखाओं से घेरते हुए एक वर्ग बनाते हैं, और इन्हे कमल की पंखुड़ियों से सजाते हैं। एक सरल तरीका यह है, कि 9 बिंदुओं से स्वास्तिक बनाये इसे नव स्वास्तिक कहा जाता है। इसके कई रूप है केंद्र में स्वास्तिक के साथ तीन क्षैतिज और ऊर्ध्वाधर रेखाएँ खींचकर एक सरल संस्करण बनाया जाता है।

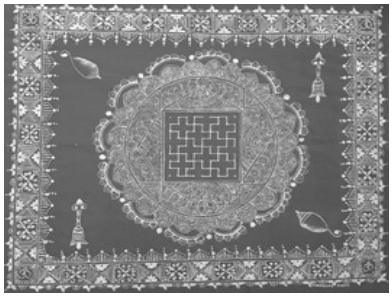

6) **शिव या शिवाचर्य पीठ : –** शिव हिमालय के लोगों के अधिपति देव हैं। सावन या माघ माह में इनकी विशेष पूजा की जाती है। 28 या 108 पार्थिव लिंगों को तांबे की थाली में रखा जाता है, और जमीन पर शिव या शिवार्चन पीठ बनाई जाती है, या 8 कोनो वाला डिजाइन है। जिसमें 12 बिंदु 12 रेखाओं से जुड़े हुए हैं। इसे और अधिक आकर्षक बनाने के लिए 4 प्लस चार कोणों की बाहरी सीमाएं हैं।

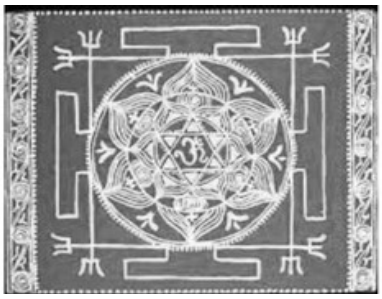

7) **सूर्य दर्शन चौकी :–** यह नवजात शिशु के नामकरण संस्कार से जुड़ी है। 11 वें दिन तक शिशु को घर के अंदर रखा जाता है। 11वें दिन शिशु को सूर्य दर्शन के लिए बाहर लाया जाता है। यह चौकी उस फर्श पर बनाई जाती है। जहां पुजारी बैठकर मंत्र पढ़ते है।

8) **जनेऊ चौकी :–** चौकी विशेष रूप से जनेऊ संस्कार के लिए बनाई जाती है। 6 तरफा चित्र के भीतर साथ सितारे मुख्य भाग बनाते हैं। 7 तारे सप्त ऋषियों का प्रतिनिधित्व करते हैं। इसके चारों ओर बिंदुओं वाले पुष्प डिजाइन बनाए गए हैं।

9) **आसान चौकी :–** यह विभिन्न पूजाओं के लिए उपयोग की जाने वाली कई प्रकार की चौकियों से जुड़ी है। यह अनुष्ठानिक पूजा के लिए भक्त और उसकी पत्नी के लिए एक सजाया हुआ आसान है।

10) **धूलि अधर्य चौकी :–** भारत के गोधूलि वेला को ''गोधूलि बेला'' कहा जाता है, या वह समय जब गायें चरागाहो से घर लौटती है। उनके खुरों से जो धूल उड़ती है। वह समय को अपना नाम देती है। शदियों के लिए दूल्हे की पार्टी शाम के इस समय दुल्हन के घर पहुंचता है। तो पुराने दिनों में दूल्हे का दल आमतौर पर दुल्हन के घर तक पैदल जाता था, और वे धूल भरे पैरों के साथ पहुंचते थे, चूकि इस अवधि का वर ''नारायण'' का प्रतिनिधित्व करता है। स्वयं भगवान इसलिए उनका श्रद्धापूर्वक स्वागत किया जाता है। उनके स्वागत में पूजा शुरू होने से पहले उनके धूल से सने पैर धोए जाते हैं। वह एक ''चौकिल'' या छोटे स्टूल पर खड़ा है, जिस पर एक पेड़ जैसी आकृति बनाई गई है। जिसके शीर्ष पर तीन शाखाएँ निकली हुई है।

11) **आचार्य चौकी :–** दूल्हे के साथ हमेशा उनका अपना पंडित या आचार्य होता है। पंडित को दूल्हे के पिता से भी अधिक महत्व दिया जाता है। इसलिए उनके लिए एक विशेष चौकी बनाई जाती है। इस पर लाल रंग से स्वास्तिक बनाया जाता है। स्वास्तिक के चारों ओर कमल और अन्य शुभ प्रतीक जैसे :– घंटी, शंख कभी–कभी दो तोते भी चित्रित किए जाते हैं।

12) **दुर्गा थापा :–** दुर्गा थापा को कुमाऊ की महिलाओं द्वारा वर्ष के दौरान आयोजित दो दुर्गा पूजाओं के लिए कागज पर चित्रित किया जाता है। एक मार्च–अप्रैल में और दूसरा दशहरे के त्योहार से पहले, पूजा नौ दिनों तक होती है, और इसलिए इसे नवरात्र कहां जाता है।

13) **ज्योति पट्ट :–** कुमाऊँ की पहाड़ियों में ब्राह्मण और साहपरिवारों के बीच शादीया पवित्र धागा समारोह में ''ज्योतीस'' निकालने की प्रथा हैं। पहले के समय में ''ज्योंतिस'' उन कमरों की दीवारों पर चित्रित भित्तिचित्र थे जहां धार्मिक समारोह होते थे ये चित्र अब कागज, हार्डबोर्ड या प्लाईबुड पर बनाए जाते हैं यहाँ तक कि मुद्रित ज्योंती पट्टे भी उपलब्ध है, ज्योती जीव मातृकाओ– महालक्ष्मी, महासरस्वती और महाकाली के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला स्थानीय शब्द है। कुमाऊँ में मातृकाओं की पूजा एक प्राचीन परंपरा है।

## विधिया

ऐपण उत्तराखंड की एक पारंपरिक लोककला है। ऐपण कला की कहानी हमें दो चीजों से अवगत कराती है। संस्कृतिक उपकरणों का आध्यात्मिकीरण और सामाजिक व्यवहार में अनुष्ठान की प्रक्रिया कुमाऊँ समाज में किसी भी अन्य समाज की तरह, कुछ संहिताबद्ध सामाजिक पथां हैं। इन प्रथाओं में पूजा, व्रत, उत्साह, समारोह या पूजा करने के लिए मंदिर जाना शामिल है। जिन कामकाजी उपकरणों से महिलाये ऐपण कला की अनुष्ठानिक प्रक्रिया के लिए तैयार करती है। वे संस्कृति उपकरण बन जाते हैं। जो कला बनाने की पूरी प्रक्रिया के पीछे एक अर्थ का संचार करते हैं। ऐपण में प्रयोग किए गये रंग प्राकृतिक होते हैं। उपयोग किया जाने वाला पहाड़ी लाल मिट्टी जिसे हम गेरू कहते हैं। इसका प्रयोग आधार तैयार करने में किया जाता है, और सफेद रंग जो चावल को भीगाकर रख दिया जाता है, और चावल के भीगने के बाद उसे पीसा जाता है। जिसे स्थानीय भाषा में (बिस्वार) कहा जाता है। गेरू से आधार तैयार हो जाने के बाद चावल के पीसे हुए घोल से वह की स्थानिय महिलाये अपनी दाहिनी हाथ की आखिरी तीन उँगुलियो का उपयोग करके अपने घरों की दीवार, फर्श व सीढियों पर ऐपण के डिजाइन बनती है। ऐपण में विभिन्न प्रकार की चौकी बनायी जाती है। जो आम की लकड़ी से बनाई जाती है, और प्रत्येक अवसर के लिए विशेष डिजाइन के साथ चित्रित की जाती है।

## ऐपण डिजाइन में मुख्य चौकिया

मा लक्ष्मी के चरण, गणेश जी की चौकी, शिव शक्ति पीठ, सरस्वती पीठ चौकी, विष्णु पीठ ,आचार्य चौकी, नामकरण चौकी, विवाह चौकी आदि परंपरागत गाव की महिलये स्वयं बनाती है। लोक कला की दृष्टि से उत्तराखंड बहुत ही समृद्ध है। घर की सजावट में ही लोककला सबसे पहले देखने को मिलती है। दशहरा, दीपावली, नामकरण, जनेऊ आदि अवसरो पर महिलाएँ घर में ऐपण (अल्पना) बनती है। कुमाऊँ की इस अनमोल धरोहर को सजाने, सवारने, सहेजने का पूरा श्रेय यहाँ की महिलाओं को जाता है। सच में महिलाओं ने ही इस कला को जीवित रखा है। महिलाएं इस कला के माध्यम से अपने मन के भाव व अपनी शुभकामनाओं की अभिव्यक्ति अपने घरों में प्रतिक के रूप में करती है। इससे न सिर्फ घर सुंदर दिखता है बल्कि पवित्र भी हो जाता है। ऐपण के बिना धार्मिक अनुष्ठान त्यौहार व पूजा अधूरी मानी जाती है। धार्मिक अनुष्ठान में इस कला का प्रयोग चौकी बनाने बाद दहलीज व ऑगन को सजावट के लिए भी किया जाता है। उत्तराखंड के अलावा अन्य राज्यों में भी इस कला का प्रयोग किया जाता है, और हर राज्यों में इसे अलग–अलग नामो से जाना जाता है। यह कला देवी–देवताओं और प्रकृति के पहलुओं पर आधारित है। देवी–देवताओं और प्राकृति की वस्तुओं से संबंधित विभिन्न ज्यामितीय और अन्य आकृतियों के चित्रण से सजाया जाता है। पिछौड़ा या दुपट्टे को भी इसी प्रकार से सजाया जाता है।

## प्रमुख कलाकार (मीनाक्षी ख्याति)

उत्तराखंड की मीनाक्षी ख्याति को आज देश भर में ऐपण गर्ल के नाम से जाना जा रहा है, क्योंकि उन्होंने राज्य की पारंपरिक कला, ऐपण को सहेजकर लोगों को इससे जोड़ा है, और उत्तराखंड के रामनगर शहर की 24 वर्शीय मीनाक्षी ख्याति ने राज्य के पारंपरिक कला ऐपण को लोगों के घरों तक पहुंचा दिया है। आज यह कला कुमाऊँ क्षेत्र के हजारों लोगों के लिए आजीविका का स्रोत बन गई है, और उन्होंने रोजगार देने का भी काम कर रही है। एपेण उत्तराखंड के कुमाऊँ क्षेत्र की एक पारंपरिक लोककला है। कुमाऊँनी लोगों का मानना है, कि ऐपण कला के जरिए लोग एक दैविक शक्ति का आह्वन करते हैं। जो अच्छा भाग्य लाती है, और बुराई को खत्म करती है।

## निष्कर्ष

ऐपण की सुंदरता इसे बनाने वाली कुमाऊँनी महिलाओं की आत्मा–अभिव्यक्ति और समुदाय के सामाजिक और सांस्कृतिक ताने–बाने को बनाने वाले धार्मिक अनुष्ठानों में उनके महत्वपूर्ण योगदान में निहित है। यह सामूहिक अतीत के साथ जुड़ाव के साथ–साथ समुदाय की भावना को भी जीवित रखते हैं। जिसे उन्हें कठिन समय में स्थिरता, एकजुटता और आशा मिलती है। कला का

अनुष्ठानीकरण इसलिए होता है, क्योंकि यह मुख्य धार्मिक अनुष्ठान का पूरक होता है। ऐपण घर को पवित्र करता है। ताकि प्रार्थनाएं परिणाम देख सके महिलाऐ घरों के विभिन्न जगहों पर ऐपण कला बनाती है। वर्तमान समय में तकनीकी संसाधनों के विकास में ऐपण हेतु कई वैकल्पिक संसाधन विकसित कर दिए हैं। आज विभिन्न प्रकार के आधुनिक उपकरण पेंट ब्रश स्टीकर, कीप आदि ने ऐपण को और भी आधुनिक बना दिया गया है। जहां प्राचीन समय में यह दीवारों, मंदिरों एवं अँगनों तक ही सीमित था। वही आज हम ऐपण की कलाकृतियों को पूजा थाल, नामपट्ट (नेम प्लेट) कुशन कवर विभिन्न चौकियों की होल्डर, कलश बर्तन आदि पर भी इस कला को उकेरने में सफल हुए हैं। आज की इस भागदौड़ भरी जिंदगी में हमारा समाज रोजगार एवं उचित सुविधाओं की चाह में पलायन के साथ–साथ हमारी संस्कृति को भी भूलते जा रहे है। जिस कारण ऐपण का महत्व सीमित ही रह गया है। जिसे संरक्षित करने की जरूरत है, ताकि पूर्वजों द्वारा धरोहर के रूप में हमें प्रदान की गई। इन संस्कृतियों के इस महत्वपूर्ण भाग को सुरक्षित एवं विश्व स्तर पर उकेर कर एक नायब पहचान दिलाया जा सके। वर्तमान समय में जिन आधुनिक तारीको से हम इस लोककला को भूलने की कोशिश कर रहे हैं। इस पर लगाम लगाने के नितांत आवश्यकता है। जिससे हम हमारी लोककला ऐपण को लुप्त होने से बचा सकते हैं। इसके लिए हमें खुद जागरूक होना होगा, और आधुनिकतावाद की दुनिया में इस लोककला के संरक्षण के लिए प्रयास करना होगा। हमें खुद जागरूक होकर इन टाइल्स और स्टिकर के उपयोग से खुद को दूर रखना रखकर इस लोककला के संरक्षण हेतु प्रयास करने होंगे।

**संदर्भ**

1. en- m- wikipedia- org
2. hi- m- wikipedia- org
3. devbhoomidarshan- in
4. euttaranchal- in
5. kaareegari- com
6. rooftopapp- com
7. linkedin- com
8. From gottv- com
9. Wegarhwali- com
10. holidify- com
11. jayuttarakhandi- com
12. artistrytreasure- medium- com
13. quora- com